International Journal of Sanskrit Research 2018; 4(4): 90-91

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(4): 90-91
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 17-05-2018
Accepted: 18-06-2018

मीरा

डॉ0 प्रभा माधुनी
निर्देशिका, पूर्व प्राचार्या एवं अध्यक्षा, संस्कृत विभाग, वैकुण्ठी देवी कन्या महाविद्यालय, आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Correspondence
मीरा

प्रमुख गद्यकाव्यों एवं चम्पूकाव्यों में पर्यावरणीय संरक्षण का संदेश

मीरा, डॉ0 प्रभा माधुनी

प्रस्तावना

पर्यावरण का क्षेत्र विस्तृत है। श्वांस– प्रश्वांस की तरह पर्यावरण की आत्मा अनेक विषयों में रमी हुई है, ऐसी कोई जगह नहीं है। जहाँ पर्यावरण की झलक न हो जिसमें पर्यावरण नहीं होगा तो उसमें रसना नहीं होगी चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में भी पेड़–पौधों से मिलने वाली जडी–बूटियाँ, वनस्पतियाँ व औषधियाँ पर्यावरण के क्षेत्र की हैं।

सामाजिक जीवन में पर्यावरण मुख्य आधार है, जिसमें पशुओं से दुग्ध, घृत मक्खन और पनीर एवं दैनिक जीवन की सभी आवश्यक वस्तुएँ प्राप्त होती हैं, धार्मिक अनुष्ठानों में पर्यावरणीय वस्तुओं पेड़–पौधों और पशुओं से तादात्म्य रहा, वरगद, पीपल, तुलसी की पूजा की, उसके तले घृत के दीपक जलाये, तुलसी के साथ चरणामृत लिया [1] पूजा में फलों को रखा, हरे–भरे पेड़ों को न काटने की विचार धारा को पल्लवित किया, गाय को माता मानकर पवित्रता के साथ जोडा [2] अतः हमारा सामाजिक जीवन एक धार्मिक अनुष्ठान के रूप में व्यतीत होता है। [3] पर्यावरण का यह प्रतिबिम्ब गद्यकाव्यों एवं चम्पूकाव्यों में एक संदेश के रूप में दृष्टिगोचर होता है।

भू– संसाधन

प्राचीन काल से ही इस पृथ्वी पर वर्फीले पहाड़, हिम, नदियाँ, सागर मरुस्थल, देवस्थान, राजमहल, तालाब व गौशालायें आदि स्थित थी। [4] पहाड़ों की कन्दरायें घने जंगल और पहाड़ियों से घिरे दुर्ग आदि क्षेत्र मानव सुरक्षा एवं अन्य सुविधाओं के प्राकृतिक साधन थे, जिसमें वन्य जीव–जन्तु निवास करे थे। [5]

चम्पूरामायण में वर्णन है कि गोकर्ण नामक सिद्धक्षेत्र में तपस्या करते हुए भागीरथ पर प्रसन्न होकर, अति दयालु महादेव ने आकाश से गिरती हुई गंगा को धारण करने की अपनी स्वीकृति दी [6]

प्राचीन समय इस भूमि पर बहुलता से वन सम्पदा खडी थी जो वायुमण्डल की विभिन्न वाष्पों का सन्तुलन बनाये हुए थी तथा प्रदूषण की रोकथाम कर रही थी। आज भी पृथ्वी के गर्भ में अनेक प्रकार की खनिज सम्पदा पायी जाती है [7] जो मानव के लिए बहुत ही उपयोगी है। शंख, सीप, मोती, मूंगे एवं मरकत मणि आदि प्राकृतिक वस्तुओं का वर्णन वाणभट्ट ने कादम्बरी में किया है। [8]

जलस्त्रोत –

जल ही जीवन है। पर्यावरण में ये जल सदैव उपस्थित रहता है जो वर्षा, वर्फ, ओस, ओले, आदि जल स्रोतों के रूप में विद्यमान रहता है।

ब्रह्माण्ड में पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है, जहाँ पर्याप्त मात्रा में जल है। यह जल महासागरों, नदियों, झीलों, हिमनदों तथा भूगर्भ में समाहित है। प्राकृतिक रूप से जल वर्षा द्वारा ही प्राप्त होता है अतः सम्पूर्ण विश्व का जीवनाधार वर्षा ही है। [9] कादम्बरी में उल्लेख है कि राजा चन्द्रापीड़ ने चन्द्रायुध घोडे को सरोवर में, पत्थरों के झरनों में, तथा नदी के जल में स्नान कराया, पानी पिलाया तथा स्वयं स्नान किया। [10]

हमारे ऋषि मुनि नदियों के किनारे पर ही वास करते थे। [11] गगां जैसी नदियों का पवित्र जल पूजा, पाठ, आचमन आदि प्रयोग में लाया जाता है। [12] सृष्टि के निर्माता ने जल पर ही सृष्टि की रचना की [13] इस प्रकार जल हमारे पर्यावरण को सन्तुलित रखने में महत्वपूर्ण योगदान देता रहा है। जल प्रदूषण एवं इसके अनावश्यक दोहन को रोककर मानव का जीवन सफल हो सकता है। अतः इसके लिए जन चेतना लाकर जागरुकता अभियान चलाना है।

मन्दारमञ्जरी में वर्णित है कि कुछ खनिज समुद्रों से भी प्राप्त हुए जैसे कौस्तुभ मणि जो देवताओं को प्रदान की गयी, सूर्यकान्त मणि सूर्य की तरह चमकीली होती है। [14]

वनस्पतियाँ मानव जाति की पोषक माँ हैं। अक्षय धन हैं। अतः हमारे दैनिक जीवन में वनस्पतियाँ का अत्यन्त महत्व रहा है। हर्षचरित में वर्णन है कि पर्यावरण संरक्षण हेतु घर आँगनों में फुलवारियाँ सुगन्धित वनस्पतियाँ आदि की क्यारियाँ उगाई जाती थी। [15] जो हवन कृतियों में उपयोगी थी। इसमें भी हमें पर्यावरण के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। हाथी जंगल का जीव होते हुये भी मानव के लिए बहुत उपयोगी है हाथी के दाँतों से बनी मुष्टिका से विभिन्न खिलौने आदि बनाये जाते हैं। [16] जादू टोनों में इसका गोमय आदि उपयोगी है। हाथी दाँत से आभूषण व श्रृंगार आदि वस्तुएँ भी निर्मित की जाती है। [17] शूकर गन्दगी विनाश करने वाला, प्रदूषण नष्ट करने वाला व अन्य कार्यों में सफाई आदि के लिए निःशुल्क सेवा प्रदान करता है।

इस प्रकार प्रकृति की प्रत्येक रचना मानव के लिए हितकर एवं चेतन स्वरूप है, जीवन का एक साधन है, अतः इसकी सुरक्षा रखना मानव का ही धर्म है।

सन्दर्भ सूची

1. हर्षचरितम्, अष्टम उच्छ्वासः पृ0413
2. वही, तृतीय उच्छ्वासः पृ0 178
3. नलचम्पू, षष्ठ उच्छ्वासः पृ0 402
4. मन्दिर–प्रासाद–हर्म्य–श्रृडगाटक तड़ाग–गोष्ठमयानि। शिवराजविजय, प्रथम विराम, प्रथम निश्वासः, पृ0 52
5. परितः पर्वतदरीषु महारण्येषु अवस्थास्पन्ते। शिवराजविजय, प्रथम विराम, प्रथम निश्वासः, पृ0 27
6. ततो गोकर्णमासाद्य तपस्यति भगीरते। देवो देवापगां वोढुमन्वमस्त दयानिधिः ।। चम्पूरामायणम्, बालकाण्डम् पृ0 68
7. नलचम्पू पंचम उच्छ्वासः पृ0369
8. प्रकटशंखशुत्ति मुक्ता प्रवाल मरकतिमणि राशिभिः। कादम्बरी पूर्वभागः, पृ0 105
9. सकलजगज्जीवन हेतु नापि वर्षा। कादम्बरी उत्तरभागः पृ 603
10. कस्मिश्चित्सरसि शिलाप्रस्त्रवणे कृत्वा स्वयं च सलिलं पीत्वा कादम्बरी,पूर्वभागः, पृ0 252
11. मार्कण्डेयप्रमुखमहामुनि निवासपवित्रताः पुण्याः। नलचम्पूः, षष्ठ उच्छ्वासः, पृ0 436
12. नलचम्पू, षष्ठ उच्छ्वासः, पृ0 437
13. महाप्रलयेतु प्रलय पयेादाः। कादम्बरी, पूर्वभागः, पृ0 260
14. केनापिवह्नि विशेषेणेव ससूर्यकान्तेन्। मन्दारमञ्जरी, पृ0 77
15. हर्षचरितम् ,द्वितीय उच्छ्वासः, पृ0 78
16. शिवराजविजय, प्रथम विराम, द्वितीय निश्वासः, पृ0158
17. हस्त दन्तं निर्मितं आभूषणम्। कादम्बरी पूर्वभागः, पृ0 20